पाठ 18. जादुई बाँसुरी

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ द्वारा बुद्धि चातुर्य तथा हाज़िरजवाबी का वर्णन किया गया है। इस कहानी का उद्देश्य वाक्पटुता के साथ-साथ लालच न करने की सीख देना भी है।

पाठ का सारांश

मनुबा नाम का एक चरवाहा मैदान में अपनी भेड़ें चरा रहा था। अचानक वह खुशी से उछल पड़ा और बोला, "मैंने पहेली बूझ ली।" उसकी इस हरकत से उधर से गुज़र रहे नौजवान का घोड़ा डर गया। घुड़सवार ने लड़के को डाँटा तो उसने अपनी खुशी का कारण बताया। मनुबा जिस पहेली को बुझाने पर खुश था उसका जवाब घुड़सवार न दे सका। घुड़सवार ने भी मनुबा को अपनी बात में उलझाना चाहा मगर उसने घुड़सवार की बात का बड़ी खूबसूरती से जवाब दिया। घुड़सवार मनुबा की चतुराई से बहुत खुश हुआ। उसने मनुबा को एक जादुई बाँसुरी भेंट की। जिससे मनुबा बिना लालच किए अपनी मनचाही वस्तु माँग सकता था। मनुबा ने भी घुड़सवार को एक भेड़ भेंट में दी।

अध्यापन संकेत

पाठ वाचन से पूर्व पाठ की ओर बच्चों का रुझान करने के लिए उनसे कुछ पहेलियाँ पूछें। इससे बच्चों में पाठ के प्रति रोचकता बढ़ेगी। बताएँ कि अब हम जो पाठ पढ़ेंगे, उसमें एक बालक इसी तरह पहेलियाँ बूझता-बुझाता है।

पाठ का आदर्श वाचन करें।

- पूछें, उन्हें यह कहानी कैसी लगी?
- यदि तुम्हें कुछ पहेलियाँ आती हैं तो पूछो।
- समझाएँ, किसी बात का जवाब बहुत सोच-समझ कर देना चाहिए।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।